

विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय-हिंदी
वर्ग-पंचम

दिनांक-07/07/2020
विषय-शिक्षिका— नीतू कुमारी
(N.C.E.R.T. पर आधारित)
चेतक

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कविता में आपने चेतक कविता का अध्ययन किया। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अध्ययन-सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें होंगे। आज की कक्षा में आपको कविता का भावार्थ जानना है। जो कि इस प्रकार है:—

यह कविता ओज गुण से परिपूर्ण है। इस कविता में राणा प्रताप के अमर घोड़े चेतक की वीरता का गुणगान हुआ है। हल्दी घाटी के युद्ध में चेतक की भूमिका वीरता एवं साहस का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करती है कि वह युग-युगों से प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। श्याम नारायण पांडेय की प्रस्तुत कविता का भावार्थ यह है कि— युद्ध के मैदान में चौकड़ी भरके चेतक निराला हो गया था। हवा का पाला राणा प्रताप के घोड़े से पड़ गया था। चेतक को कभी भी कोड़े नहीं पड़ते थे। वह दुश्मनों के सर पर दौड़ता था। लगाम की रस्सी के हिलने से वो सवार को लेकर उड़ जाता था। राणा के एक इशारे पर वह मुड़ जाता था। वह भयानक भालों के बीच चलकर अपना कौशल दिखाता था। बिजली के समान कठोर वह दुश्मनों की सेना पर गिरता था। भाला, तरकस सब गिर गया, घोड़े के टापों ने सबके अंगों को कुचल दिया। सारे दुश्मन घोड़े के ऐसे रूप की देखकर दंग रह गए।

बच्चों, भावार्थ को वर्ग-कार्य कॉपी में सुंदर तथा साफ़ अक्षरों में लिखें तथा समझने का प्रयास करें।

गृहकार्य :—

पेज नं-37 में दिए गए शब्दार्थ याद करके अपने माता-पिता को सुनाएँ।